ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 ईमेल-bsmirgae@gmail.com

---

मुहावरों पर बनी फिल्म विदेशी हिंदी शिक्षकों के लिए मददगार होगी-कुलपति राय

हिंदी विश्वविद्यालय ने बनायी मुहावरों पर फिल्म, वर्धा के पास वायफड गांव में हुई शुटिंग, नाटय एवं फिल्म अध्ययन विभाग की प्रस्तुति

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के नाटय एवं फिल्म अध्ययन विभाग की ओर से मुहावरों पर बनायी फिल्म विदेशों में हिंदी पढ़ाने वाले अध्यापकों को मददगार साबित होगी। दृश्य माध्यम द्वारा हिंदी की पढ़ाई की दिशा में विश्वविद्यालय की यह पहली श्रृंखला हिंदी के अध्यापन में मील का पत्थर साबित होगी। उक्त आशय के विचार विवि के कुलपति विभूति नारायण राय ने व्यक्त किये। वे मुहावरों पर बनायी फिल्म 'मुहावरे' के प्रदर्शन के अवसर पर बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि मुहावरे किसी भी भाषा की जान होते हैं। मुहावरे भाषा को अधिक सम्प्रेषणीय बनाते हैं और भाषा की आंतरिक शक्ति को पहचानने में मदद करते हैं। फिल्म निर्माण के पीछे की मंशा को उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी पर देशज व अन्य भारतीय भाषा और बोलियों का असर पड़ा है। हिंदी समाज का लोक जो भाषा और बोली इस्तेमाल करता है वह खासतौर पर भोजपुरी, मगही, मैथिली, झारखंडी तथा दूसरे अन्य प्रदेशों में बोली जाने वाली बोलियां है और इन्ही बोली और भाषाओं से हिंदी को शक्ति मिलती है। उसकी शक्ति खास अर्थ में मुहावरों के रूप में दिखायी देती है। उन्होंने कहा कि हिंदी विवि का दायित्व है कि वह हिंदी पठन-पाठन के लिए विदेशी अध्यापकों को मदद करें और उनके लिए हिंदी के विविध रूपों का परिचय कराएं। इसी श्रृंखला के तहत मुहावरों पर फिल्म का निर्माण किया गया है। उन्होंने आशा जतायी कि फिल्म के माध्यम से हिंदी के मुहावरों से विदेशी शिक्षक तथा छात्रों को हिंदी सीखने में आसानी होगी और वे मुहावरों से भी परिचित हो सकेंगे।

विवि के हबीब तनवीर सभागार में फिल्म के प्रथम प्रदर्शन के अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. ए. अरविंदाक्षन, कुलसचिव डॉ. के. जी. खामरे, उपकुलसचिव पी. एस. सिंह, विशेष कर्तव्याधिकारी नरेन्द्र सिंह सहित अध्यापक एवं छात्र प्रमुखता से उपस्थित थे।

इस फिल्म के कार्यकारी निर्माता प्रो. रवि चतुर्वेदी हैं तथा निर्देशन, संपादन व ध्वनिसंकलन सहायक प्रोफेसर डॉ. रयाज हसन का है। लेखक सहायक प्रोफसर डॉ. रूपेश कुमार सिंह है। फिल्म कलाकार के रूप में अखिलेश दीक्षित, सर्वेश गुप्ता, अनीता गुप्ता, डॉ. सतीश पावडे, धर्म प्रकाश, रेणु कुमारी, आशना, अर्चना त्रिपाठी, रोहित कुमार, रेखा तिवारी, तिलनी दर्शनी मुनासिंघे, अश्विनीकुमार सिंह, जैनेन्द्र दोस्त, सनी, आनंद, नरेश गौतम, राजकुमार, पीयूष दीपक, नितीश, आकाश ने भूमिका निभाई है। प्रस्तुति सहायक के रूप में नितीन धाबेकर, रश्मि पटेल, चैतन्य आठल्ये, संजय साहू व अवधेश ने काम किया। फिल्म के निर्माण में

विशेष कर्तव्याधिकारी नरेन्द्र सिंह, अनुभाग अधिकारी विनोद वैद्य तथा वायफड गांव के आशुतोष, शशांक, पंकज, शैलेश व वैभव घोडमारे ने विशेष सहयोग दिया है।

वायफड गांव में हुई शुटिंग : इस फिल्म की पृष्ठभूमि ग्रामीण परिप्रेक्ष्य से जुड़ी होने से शुटिंग के लिए वर्धा से लगभग 10 किमी की दूरी पर स्थित वायफड गांव का चयन किया गया। वहाँ के घोडमारे परिवार का घर (वाड़ा) और समस्त गांव इस शुटिंग के केंद्र में है। इसके साथ वर्धा के जिलाधिकारी कार्यालय व हिंदी विवि के परिसर में फिल्म के कुछ दृश्यों को फिल्माया गया है।

मुहावरों का इस्तेमाल :फिल्म में रोचक और प्रचलित मुहावरों जैसे दाल में काला, बात का बतंगड़ बनाना, कीचड़ उछालना, जड़ काटना, घाट-घाट का पानी पीना, उंगलियों पर नचाना, लाल पीला होना, चेहरे का रंग फीका पड़ना, ढाक के तीन पात, डंके की चोट पर, झासे में आना, छोटा मुंह बड़ी बात, घोड़ा बेच कर सोना आदि का संवादों में बखुबी इस्तेमाल किया गया है।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी